



THE
MENTORING
PROJECT

बूढ़े माता-पिता की देखभाल करना:
कठिन समयों में उनका
आदर करना



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

**बूढ़े माता-पिता की देखभाल करना:
कठिन समयों में उनका आदर करना**



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI

EDITOR: DR. LARRY OATS

(लेखक: डॉ. रिचर्ड परहाई)

सम्पादक: डॉ. लैरी ओट्स)

विषय-वस्तु

परिचय	4
भाग I: आदर का महत्व	6
भाग II: प्रतिदिन देखभाल की मुश्किल	10
भाग III: मन की खाई	14
भाग IV: कलीसिया और देखभाल करने वाला.....	17
भाग V अन्तिम मील	20
निष्कर्ष: अनुग्रह की फसल	22



परिचय

रसोई की मेज पर बैठे हुए, मैंने अपने पिताजी को अपनी गाड़ी की चाबियाँ छोड़ने की सच्चाई से संघर्ष करते हुए देखा। कई वर्षों तक, उन्हीं के हाथों ने हमारा संसार बनाया था, और मुझे काम करना तथा दृढ़ता से खड़े रहना सिखाया था। परन्तु उस दिन, वे पहले से कहीं अधिक छोटे लग रहे थे। उनके हाथ काँपते रहे, और गुस्सा करने के बजाय, वे भारी खामोशी में बैठे रहे। उन्होंने गाड़ी चलाने के अपने सारे वर्षों के बारे में बात करते हुए बताया कि अपने बेटे से यह सुनना कितना कठिन था कि वह अब लोहे की वस्तुओं की दुकान तक गाड़ी चलाकर नहीं जा सकते।

बूढ़े माता-पिता की देखभाल करने का अर्थ केवल उनकी दवाइयों का प्रबन्ध करना या उन्हें चिकित्सक के पास ले जाने का प्रबन्ध करना नहीं होता है। इसका अर्थ किसी ऐसे व्यक्ति को धीरे-धीरे सहायता की आवश्यकता वाला मनुष्य बनते हुए देखना है, जो कभी दूसरों के लिए मजबूत सहारा रहा था। यह बदलाव परिवार में दूरियाँ उत्पन्न कर सकता है, और अक्सर घमण्ड इसमें बाधा बनता है। यह एक उलझा हुआ और मुश्किल काम है।

हम अक्सर पाँचवीं आज्ञा को बच्चों के लिए कही गई कोई बात, या पालन करने के लिए एक साधारण सा नियम मानते हैं। परन्तु अपने माता-पिता का आदर करना उससे कहीं अधिक बढ़कर है। बचपन में, इसका अर्थ अपना कमरा साफ करना हो सकता है। बड़े होने पर, इसका अर्थ गाड़ी की चाबियाँ ले लेना या ऐसे माता या पिता की देखभाल करना हो सकता है, जिन्होंने कभी आपकी देखभाल की थी। बहुत से लोग सोचते हैं कि जब देखभाल करना कठिन लगे, तो अपने माता-पिता का आदर कैसे करें। आदर करना केवल एक अच्छी भावना नहीं है—यह एक जिम्मेदारी है और उन लोगों की देखभाल करने का एक तरीका है, जो महत्व रखते हैं।

हम अक्सर भण्डारीपन को धन से जोड़कर देखते हैं, परन्तु असल में इसका अर्थ उन वस्तुओं की देखभाल करना है, जो हमारी नहीं हैं। आपके माता-पिता यहाँ इसलिए नहीं हैं कि आप उन्हें नियंत्रण में रखें या उन्हें ठीक करें। वे परमेश्वर के स्वरूप में बने हुए लोग हैं, और आपको इस कठिन दौर में उनकी देखभाल करने का काम सौंपा गया है। उनकी गरिमा की रक्षा करना आपकी जिम्मेदारी है, विशेष रूप से तब जब वे स्वयं ऐसा नहीं कर सकते। असली मसीही जीवन—केवल कलीसिया में ही नहीं, बल्कि उन शान्त पलों में भी ऐसा ही दिखता है, जब आप थके हुए हों और बार-बार एक ही प्रश्न का उत्तर दे रहे हों।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

यहीं पर विश्वास वास्तविकता बन जाता है, क्योंकि हम जानते हैं कि यह संसार बिखरा हुआ है। बुढ़ापे की समस्याएँ—जैसे मनोभ्रंश, भूलने की बीमारी और कमजोर शरीर—एक दुःखी संसार की निशानियाँ हैं। इसमें कुछ भी सुन्दर नहीं है। यह बस कठिन है। मैं ऐसी बेटियों से मिला हूँ, जो स्वयं को दोषी महसूस करती हैं और ऐसे बेटों से मिला हूँ, जो इसलिए परेशान हैं, क्योंकि उनके माता-पिता में बहुत अधिक बदलाव आ गया है। कई लोग सोचते हैं कि परमेश्वर लोगों को इस तरह कमजोर क्यों होने देता है।

परमेश्वर हमसे नायक बनने की आशा नहीं करता, परन्तु वह चाहता है कि हम सेवा करें। इतिहास में कई विश्वासयोग्य लोगों ने बिना किसी आधुनिक सहायता के मरते हुए लोगों की देखभाल की। उनके पास ब्लॉग या वेबसाइट से मिलने वाली कोई सलाह नहीं थी; उनके पास बस अपना विश्वास और अपनी बुलाहट की समझ थी। वे समझ गए थे कि किसी शान्त और कठिन जगह पर किसी व्यक्ति की देखभाल करना ही प्रेम का काम है। उनका लक्ष्य व्यक्तिगत भरपूरी नहीं, बल्कि विश्वासयोग्य रहना था। उन्होंने इसे अपनी सेवा में रुकावट नहीं, बल्कि सेवा करने का एक और रूप माना।

यह आसान या आकर्षक काम नहीं है। आप थक जाएँगे, और अकेले होने पर रो भी सकते हैं। परन्तु यदि आप आज की रात अपने माता-पिता की देखभाल कर रहे हैं, तो आप अकेले नहीं हैं। मसीह समझता है कि आप किस दौर से होकर गुजर रहे हैं, और वह आपको सामर्थ्य देगा।

आइए इस आज्ञा पर दृष्टि डालें।

1

आदर का महत्व

हमें पाँचवीं आज्ञा को मातृ-दिवस के लिए किसी भावुक कर देने वाले कार्ड की तरह नहीं समझना चाहिए। जब सौनंद पर्वत पर परमेश्वर ने उस पटिया पर “तू अपने माता-पिता का आदर करना” लिखा, तो वह हमें केवल उस समय “अच्छा” व्यवहार करने का सुझाव नहीं दे रहा था कि जब यह सुविधाजनक हो। वह मानवीय समाज की नींव रख रहा था। हम इस आज्ञा को व्यवस्था की चूल के रूप में देखते हैं। यह परमेश्वर के प्रति हमारे स्वर्गीय कर्तव्य और अपने पड़ोसी के प्रति हमारे सीधे कर्तव्य के बीच एक पुल जैसा है। यदि आप घर में परमेश्वर के द्वारा नियुक्त अधिकारियों का आदर नहीं कर सकते, तो आप घर के बाहर किसी और का आदर भी नहीं कर पाएँगे।

परन्तु आइए इसे विस्तार से समझें। इब्रानी भाषा में आदर के भाव को बताने के लिए कई शब्दों का उपयोग किया जाता है। इसमें मुख्य शब्द *काबोद* है। इसका शाब्दिक अर्थ “महत्व” है। अपने माता-पिता का आदर करने का अर्थ केवल कोई विशेष भावना महसूस करना नहीं है। इसके बजाय, उन्हें वह “महत्व” देना है, जिसके वे अपनी भूमिका के कारण हकदार हैं। यह इस बात को समझने के बारे में है कि परमेश्वर ने, अपने पूरे अधिकार के साथ, उन्हें वह माध्यम बनने के लिए चुना, जिसके द्वारा आप इस संसार में आए। आपने अपना वंश नहीं चुना। आपने अपने परिवार के लिए कोई साक्षात्कार नहीं दिया। परमेश्वर ने आपको वहाँ रखा है, और इस जगह पर आपका भण्डारीपन जीवन भर रहता है, जो तब समाप्त नहीं होता, जब आप अठारह वर्ष के हो जाते हैं या जब जीवन मुश्किल हो जाता है।

वादे के साथ एक आज्ञा: एक ऐसा कर्तव्य जिसकी कोई समाप्ति तिथि नहीं है

आज की “मैं-पहले” वाली संस्कृति में, हमें स्वतंत्रता का विचार बहुत पसन्द है। हमें बताया जाता है कि हम अपने दम पर जीते हैं और हमारा एकमात्र कर्तव्य अपनी “प्रसन्नता” और “शानदार” बढ़ोतरी है। हमें लगता है कि एक बार जब हम घर से निकलकर अपना जीवन आरम्भ कर लेते हैं, तो माता-पिता के प्रति हमारा कर्तव्य वैकल्पिक हो जाता है—अर्थात् यह दूसरे दर्जे का काम हो जाता है, जिसे हम तभी करते हैं, जब हमारे पास समय हो और यदि उन्होंने इसे “कमाया” हो।

परन्तु माता-पिता के प्रति बाइबल में बताए गए कर्तव्य की कोई समाप्ति तिथि नहीं होती। यह तब समाप्त नहीं होता, जब आप घर के लिए कर्जा लेते हैं, और निश्चित रूप से, यह तब भी समाप्त नहीं होता, जब वे बीमार पड़ते हैं। यह एकमात्र ऐसी आज्ञा है, जिसके साथ एक विशेष वादा जुड़ा है: “जिससे उस देश में तू बहुत दिन तक रहने पाए।” यह कोई लेन-देन वाली घूस नहीं है। यह एक ईश-वैज्ञानिक वास्तविकता है। जो आत्मा अपनी जड़ों का आदर करने से इन्कार करती है, वह किसी बंधन में नहीं बंधी है। जब आप पाँचवीं आज्ञा को अनदेखा करते हैं, तो आप केवल अपने माता-पिता को ही ठेस नहीं पहुँचा रहे होते। आप अपनी स्वयं की नींव को भी खोखला कर रहे होते हैं।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

हम समझते हैं कि हम हमेशा ही अधिकार के अधीन होते हैं। हम अपने मालिक स्वयं नहीं हैं। हमें एक कीमत देकर खरीदा गया है। इसी कारण, हम अपने बड़े माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह सीधे तौर पर मसीह के प्रति हमारी अधीनता को प्रतिबिम्बित करता है। यदि आप कहें कि आप उस परमेश्वर से प्रेम करते हैं, जिसे आप देख नहीं सकते, परन्तु आप उस पिता की उपेक्षा करें, जिसे आप देख सकते हैं, जो अभी यह याद करने के लिए संघर्ष कर रहा है कि चम्मच-काँटे का उपयोग कैसे करना है, तो आप झूठे हैं। आदर करना एक मैराथन दौड़ है, कोई तेज छोटी दौड़ नहीं। यह उस कमरे में बने रहने की एक लम्बी और शान्त आज्ञाकारिता है, जिससे दूर चले जाने को यह संसार आपसे कहता है।

मुखिकल परिस्थिति में आदर करना: एक टूटे हुए रिश्ते वाला भण्डारीपन

अब, आइए उस परिस्थिति के बारे में बात करते हैं, जिससे अधिकांश लोग बचना चाहते हैं। जब रिश्ता चोट के निशानों से भरा हो, तो आप इसे कैसे लागू करेंगे?

मैं ऐसे स्त्री-पुरुषों के सामने बैठा हूँ, जिन्हें पाँचवीं आज्ञा को देखकर डर की अन्दरूनी भावना महसूस होती है। उनके पिता दूर रहते थे या वे क्रूर थे। उनकी माँ हेरफेर करने वाली या उपेक्षा करने वाली थी। वे पूछते हैं: “मैं ऐसे व्यक्ति का आदर कैसे करूँ, जिसने मुझे ठेस पहुँचाई हो?” उन्हें लगता है कि उनसे झूठ बोलने और यह दिखावा करने के लिए कहा जा रहा है कि अतीत में कुछ हुआ ही नहीं, या स्वयं को और अधिक दुर्व्यवहार का शिकार बनाने के लिए कहा जा रहा है।

यदि आप किसी कठोर या जहरीले स्वभाव वाले माता-पिता के साथ रह रहे हैं, तो आपको यह समझने की आवश्यकता है कि बाइबल में बताए गए आदर का अर्थ आँख बन्द करके हर बात को मंजूरी देना नहीं है।

- आदर किसी के काम का नहीं, बल्कि उसके पद का होता है। आप “पिता” या “माता” के पद का आदर कर सकते हैं, भले ही उस पद पर बैठा हुआ व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी निभाने में विफल रहा हो। आप उनके पाप का आदर नहीं कर रहे हैं, बल्कि उस परमेश्वर के अधिकार का आदर कर रहे हैं, जिसने उन्हें उस भूमिका में रखा है।
- क्षमा करना एक महत्वपूर्ण शर्त है। आप इस कर्तव्य को तब तक पूरा नहीं कर सकते, जब तक आप उन पर फेंकने के लिए पत्थरों का थैला पकड़े हुए हैं। कठोर माता-पिता का आदर करने के लिए, आपको सबसे पहले अपने दुःख को क्रूस तक ले जाना होगा। बदला लेने की इच्छा को न्याय करने वाले पर छोड़ दें, ताकि आपके हाथ दया का काम करने के लिए स्वतंत्र रहें।
- सीमाएँ तय करना कड़वाहट नहीं है। आप बिना उन्हें अपने परिवार को नुकसान पहुँचाने दिए यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपके माता-पिता की देखभाल हो, उन्हें भोजन मिले और वे सुरक्षित रहें। उनका आदर करने का अर्थ यह हो सकता है कि आप उन्हें अपने खाली शयनकक्ष में रखने के बजाय, उनके रहने का प्रबन्ध किसी सुरक्षित जगह पर करें। इसका अर्थ उन्हें आपकी आत्मा को बर्बाद करने दिए बिना, उनकी आत्मा के लिए सही काम करना है।

यह एक टूटे हुए रिश्ते का भण्डारीपन है। यह एक मजबूत और बिना भावुकता वाला प्रेम है। आप उनकी ओर इसलिये नहीं बढ़ते, क्योंकि वे इसके हकदार हैं, बल्कि इसलिये बढ़ते हैं, क्योंकि आप उस राजा की सेवा करते हैं, जो आपकी ओर तब बढ़ा था, जब आप उसके शत्रु थे। जब आप ऐसे माता-पिता की देखभाल करते हैं, जिन्होंने कभी आपकी चिन्ता नहीं

बूढ़े माता-पिता की देखभाल करना

की, तो आप इस धरती पर मसीह के जैसा सबसे बड़ा काम कर रहे होते हैं। आप ऐसा अनुग्रह दिखाते हैं, जिसका कोई “बदला” नहीं मिलता। आप एक ऐसे ईश-विज्ञान का अभ्यास करते हैं, जो धरातल पर काम करता है।

बुढ़ापे का अधिकार: शरीर क्यों कमजोर हो जाता है?

परमेश्वर शरीर को धीरे-धीरे और अत्यन्त पीड़ादायी तरीके से कमजोर क्यों होने देता है? **मनोभ्रंश**, काँपते हुए हाथ और गरिमा खोने जैसी बातें क्यों होती हैं? यदि परमेश्वर अधिकार रखता है, तो क्या वह हमें अन्तिम साँस तक चुस्त-दुरुस्त नहीं रख सकता है?

हमारी संस्कृति में, हम बुढ़ापे को एक तकनीकी खराबी के तौर पर देखते हैं—जो एक ऐसी समस्या है, जिसे विज्ञान ने अभी तक हल नहीं किया है। परन्तु बाइबल में, बुढ़ापा एक उपदेश की तरह है। यह पतन के कारण उत्पन्न हुए संघर्ष का शारीरिक रूप है। परमेश्वर हमें यह याद दिलाने के लिए शरीर को कमजोर होने देता है कि हम बस धूल हैं। वह हमें हमारी सीमाओं को दिखाने के लिए हमारी स्वतंत्रता और हमारी “जबरदस्त” सामर्थ्य को छीन लेता है।

जब आप ऐसे माता-पिता का भार उठाते हैं, जो अब खड़े नहीं हो सकते, या एक ही प्रश्न का बीस बार उत्तर देते हैं, तो आप इस संसार में जीवन की व्यर्थता को देख रहे होते हैं। परमेश्वर हमें तीन बातें सिखाने के लिए बुढ़ापे के अधिकार का उपयोग करता है:

1. हमारी पूरी निर्भरता। जैसे हम इस संसार में दूसरों पर पूरी तरह निर्भर होकर आए थे, उसी तरह हममें से कई लोग इस संसार से जाएँगे। यह याद दिलाता है कि हम आरम्भ से ही कभी “आत्म-निर्भर” नहीं थे।
2. शाप की सच्चाई। शरीर का कमजोर होना इस बात की गहरी याद दिलाता है कि हम एक ऐसे संसार में रहते हैं, जो छुटकारे के लिए कराह रहा है। यह हमें अपनी “अभी के सबसे अच्छे जीवन” की खोज छोड़ने और उस नगर को खोजना आरम्भ करने के लिए विवश करता है, जिसे परमेश्वर ने बनाया और रचा है।
3. घमण्ड का अन्त। बीमार व्यक्ति के कमरे में घमण्ड के लिए कोई जगह नहीं होती। देखभाल करने से आपका अहंकार समाप्त हो जाता है। यह आपको मानवीय जीवन की “मुश्किलों” का सामना इस तरह करने के लिए विवश करता है, जिससे आपको मसीह के अनुग्रह पर निर्भर रहना पड़ता है।

परमेश्वर भूलने की बीमारी से हैरान नहीं होता। उसे कैसर अचानक से नहीं पकड़ता। वह हमारे दिनों को गिनता है और हमारे जीवन के ढलान को भी वही तय करता है। वह हमें कुचलने के लिए इन “मुश्किल समयों” में नहीं लाता, बल्कि हमें ऐसे लोगों के रूप में ढालने के लिए लाता है, जो महिमा का बोझ उठा सकें। यदि आप किसी बूढ़े माता-पिता की देखभाल की जिम्मेदारियों में डूबे हुए हैं, तो समझ लें कि यह आपकी पवित्रता या आपकी सेवकाई के काम में कोई रुकावट नहीं है। यही आपकी पवित्रता है। यही आपकी सेवकाई है।

पाँचवीं आज्ञा एक भारी बोझ है, और यदि आप इसे अपनी सामर्थ्य से उठाने का प्रयास करेंगे, तो आप बिखर जाएँगे। आप कड़वाहट, नाराजगी और थकान से भर जाएँगे। परन्तु जब आप इसे क्रूस के दृष्टिकोण से देखते हैं—जब आपको एहसास

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

होता है कि मसीह ने सिद्धता के साथ अपने पिता का आदर किया कि आपका असिद्ध आदर भी अनुग्रह से ढका जा सके— तो यह बोझ बदलने लगता है।

यह बोझ होने से बदलकर, एक सहारा बन जाता है। यह आपको एक ऐसी कहानी से जोड़ता है, जो आपकी मौजूदा थकान से कहीं बड़ी है। यह आपको याद दिलाता है कि परमेश्वर के राज्य में एक विश्वासयोग्य सेवक की “शान्त आत्मा” इस संसार की सभी “जबरदस्त” सफलताओं से कहीं अधिक बढ़कर कीमती है।

मुश्किल परिस्थितियों में “प्रसन्न” न होने का अपराध-बोध छोड़ दें। बरतन और अंगोछा उठाएँ। न्याय करने वाले को इतिहास सम्भालने दें, और आप मंगलवार की सुबह के कर्तव्य सम्भालें। यह मार्ग लम्बा है और यह चुनींती असली है, परन्तु आप अकेले नहीं चल रहे हैं। जिसने परिवार बनाया है, वही परिवार का आदर करते समय आपको भी सम्भालेगा।

2

प्रतिदिन देखभाल की मुश्किल

एक विशेष तरह की थकान होती है, जो सप्ताह में साठ घण्टे काम करने या किसी शारीरिक संकट से नहीं आती। यह प्रतिदिन के जीवन की थकान है—जो एक “धीमे अन्तिम संस्कार” की लगातार और एक जैसी घिसाई है। हम दुःख को एक तेज और स्पष्ट दिखने वाले बदलाव की तरह सोचना पसन्द करते हैं। परन्तु बूढ़े माता-पिता की देखभाल की वास्तविकता में, दुःख कोई घटना नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया है। यह हज़ारों छोटे-छोटे नुकसान हैं, जो दवाखाने की खिड़की और रसोई की मेज के बीच होते हैं।

यहीं पर धरातल के ईश-विज्ञान के नाखूनों में बहुत सारी धूल-मिट्टी भर जाती है। शान्त कमरे में बैठकर मनुष्य के पतन के बारे में पढ़ते हुए उस पर विश्वास करना अलग बात है। परन्तु अपनी माँ के दिमाग की नसों में या अपने पिता के कूल्हे की कमजोर और टूटती हुई हड्डियों में उस पतन को होते हुए देखना बिल्कुल अलग बात है। यह एक बिखरे हुए संसार में बुढ़ापे की पीड़ादायी और व्यावहारिक वास्तविकता है।

किराने की दुकान और चिकित्सक की दुकान: धीमा अन्तिम संस्कार

यदि आप पतन की मुश्किलों को असल जीवन में देखना चाहते हैं, तो किसी ऐसे माता-पिता के साथ किराने की दुकान पर जाएँ, जिन्हें अब याद नहीं रहता कि वे उस गलियारे में क्यों आए थे। हम इसे “छोटे-मोटे काम निपटाना” कहते हैं, परन्तु देखभाल करने वाले के लिए यह किसी रणनीतिक अभियान जैसा होता है। आप केवल दुध नहीं खरीद रहे होते। आप पहचान के संकट से जूझ रहे होते हैं। आप उत्पत्ति 3 अध्याय में बताए गए उन काँटों और ऊँटकटारों के बीच से होकर गुजर रहे होते हैं, जो कभी खुशहाल रहे जीवन के मार्ग में उग आए हैं।

यह संसार कहता है कि बुढ़ापा “सुनहरा” होता है, परन्तु इस बारे में बाइबल अधिक ईमानदार है। वह हमें बताती है कि यह संसार कराह रहा है और यह शरीर कमजोर हो रहा है; दांत गिरते चले जा रहे हैं, दृष्टि धुंधली हो रही है, पाँव काँप रहे हैं (सभो. 12 अध्याय)। जब आप एक सप्ताह में तीसरी बार किसी चिकित्सक की जीवाणुरहित दुकान में बैठे होते हैं तथा किसी विशेषज्ञ से किसी और कमजोरी के बारे में सुन रहे होते हैं, तो आप उसी कराह की गूँज सुन रहे होते हैं। लोग अक्सर पूछते हैं, “मनोभ्रंश के मरीज की देखभाल करना इतना थका देने वाला क्यों होता है, जबकि मैं तो कुछ अधिक कर भी नहीं रहा होता?” यह थका देने वाला इसलिए है, क्योंकि आप एक “धीमे अन्तिम संस्कार” के गवाह बन रहे होते हैं। हर बार जब माता-पिता कोई कौशल खो देते हैं—जैसे गाड़ी चलाने की क्षमता, विधि देखकर खाना बनाने की क्षमता, बिल

भरने की क्षमता, या किसी का चेहरा पहचानने की क्षमता—तो आप उनके एक हिस्से को गाड़ रहे होते हैं, जबकि उनका बाकी शरीर पीछे ही रह जाता है।

- शारीरिक कमजोरी। यह उस शाप की घिसाई है। शरीर बिखरने के लिए नहीं, बल्कि टिके रहने के लिए बना था। जब हम इस बिखराव को देखते हैं, तो हमारा शरीर इसका विरोध करता है, क्योंकि हम अदन के लिए बनाए गए थे। हम निराशा की “तपन” इसलिए महसूस करते हैं, क्योंकि हम अपनी रंग-रंग में जानते हैं कि ये बातें ऐसे नहीं घटनी चाहिए थीं।
- मानसिक धुंधलापन। भूलने की बीमारी और मनोभ्रंश शायद पतन के प्रभाव के सबसे गहरे उदाहरण हैं। यह उस इतिहास की चोरी है, जो आपने उनके साथ साझा किया है। यह उस व्यक्ति के लिए अजनबी बन जाने की दुःख है, जिसने आपको आपका नाम दिया था।
- आत्मिक परीक्षा। चिकित्सक की दुकान एक प्रार्थना-स्थल बन जाती है। जब आपके माता-पिता सच को याद नहीं रख पाते, तो ऐसा करना आपका काम है। एक ऐसे संसार में जो उनके लिए तेजी से अवास्तविक होता चला जा रहा है, आप उनकी सच्चाई के भण्डारी होते हैं।

यह एक दोषी महसूस न करें। आप ऐसा बोझ उठा रहे हैं, जो मूल रचना का हिस्सा नहीं था। आप एक ऐसे कब्रिस्तान में काम कर रहे हैं, जो अभी भी साँस ले रहा है। इसके लिए एक अलौकिक सामर्थ्य की आवश्यकता होती है, जो केवल आत्मा ही देता है।

भूमिका के उलटफेर की खाई: गरिमा को नुकसान पहुँचाए बिना अगुवाई करना

शायद इस यात्रा का सबसे मुश्किल हिस्सा बूढ़े माता-पिता के साथ भूमिकाओं का उलटफेर है। जब बच्चा निर्णय लेने वाला बन जाता है, तो एक बड़ी खाई खुल जाती है। आप उन लोगों की अगुवाई कैसे करते हैं, जिन्होंने आपको चलना सिखाया? आप उस व्यक्ति को बच्चे के जैसे महसूस कराए बिना उनसे चाबियाँ कैसे लेते हैं, जिसने आपको गाड़ी चलाना सिखाया?

यह एक नाजुक और कठिन सन्तुलन है, और हममें से अधिकांश लोग इसमें गलती कर देते हैं, क्योंकि हम अपने माता-पिता को ऐसे “सम्भालने” का प्रयास करते हैं, जैसे वे कोई परियोजना हों जिसे बेहतर बनाना है। परन्तु वे परियोजना नहीं हैं; वे परमेश्वर के स्वरूपधारी मनुष्य हैं। कोई व्यक्ति उत्पादक होने से गरिमा नहीं पाता। उन्हें गरिमा इसलिए मिलती है, क्योंकि परमेश्वर ने अपने स्वरूप को धारण करने वाले के रूप में उनमें जीवन फूँका है।

एक “हाशिप पर पड़ा ईश-वैज्ञानिक” जानता है कि भूमिकाएँ बदलने पर आदर मिलना बन्द नहीं होता। अपने माता-पिता की अगुवाई करने के लिए अंगोछे के ईश-विज्ञान की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ है कि आप नीचे रहकर अगुवाई करते हैं।

- आज्ञा न दें, बल्कि पूछें। जब भी हो सके, उन्हें चुनने का अवसर दें, भले ही मंजिल तय हो। इससे उनके हृदय में अपना महत्व बना रहता है। इससे यह पता चलता है कि वे घर का कोई छोटा बच्चा नहीं, बल्कि आपकी देखरेख में रहने वाले एक वयस्क हैं।

बूढ़े माता-पिता की देखभाल करना

- उस पद की सुरक्षा करें। यदि आपके पिता ने अपना जीवन प्रदाता के रूप में बिताया है, तो ऐसे छोटे-छोटे तरीके खोजें, जिनसे उन्हें लगे कि वे अभी भी योगदान दे रहे हैं। किसी मरम्मत के काम में उनसे सलाह लें। किसी समस्या पर उनकी राय माँगें। भले ही उस पद वाला व्यक्ति कमजोर हो गया है, तौभी आप “पिता” के पद का आदर कर रहे होते हैं।
- धीरज धरने का अनुग्रह। जब वे आपके नेतृत्व का विरोध करें, तो समझ जाएँ कि वे आपसे नहीं लड़ रहे हैं; वे अपनी स्वतंत्रता खोने से लड़ रहे हैं। वे डरे हुए हैं। आपका काम एक ऐसी बिना घबराहट वाली उपस्थिति बनाए रखना है, जो उनके डर को गुस्से के रूप में वापस दिखाने के बजाय उसे सोख ले।

आप भूमिकाओं के उलटफेर से होकर गुजर रहे हैं, जो इसलिए अस्वाभाविक लगता है, क्योंकि, इस पतित संसार में ऐसा ही होता है। हमें उनकी देखरेख में रहने के लिए बनाया गया था, इसका उल्टा करने के लिए नहीं। उनका नेतृत्व सही से करने का अर्थ मजबूत और शान्त विनम्रता अपनाना है, जिसमें उन्हें यह याद दिलाने की आवश्यकता न पड़े कि प्रभारी कौन है। यदि आपको उन्हें यह बताना पड़े कि आप ही मालिक हैं, तो आप पहले ही उस आज्ञा के असली उद्देश्य को खो चुके हैं।

धन और भण्डारीपन: बहीखाते का बोझ

आइए भुगतान की पर्ची के बारे में बात करते हैं। बूढ़े माता-पिता के धन का प्रबन्धन करना अक्सर एक ऐसा बोझ है, जिसे लोग लेना चाहते नहीं और जिसे सम्भालने के लिए वे स्वयं को पूरी तरह अयोग्य महसूस करते हैं। यह एक दूसरी नौकरी जैसा लगता है, और आमतौर पर, यह बिना धन्यवाद वाली नौकरी है। आप उनके बीमा, उनके बिल और उनके कम होते हुए संसाधनों को सम्भाल रहे होते हैं, और साथ ही यह भी सोच रहे होते हैं कि क्या देखभाल के अगले चरण के लिए पर्याप्त धन होगा।

देखभाल करने वाले अक्सर सोचते हैं: “क्या माता-पिता के बिलों पर अपना समय और ऊर्जा खर्च करने को लेकर नाराजगी महसूस करना गलत है?” तो इसका उत्तर “नहीं” है, परन्तु इसका समाधान काम को देखने का दृष्टिकोण बदलना है। यह परदे के पीछे वाला भण्डारीपन है।

- दबाव में ईमानदारी। जब आप ऐसे धन का प्रबन्धन कर रहे होते हैं, जो आपका नहीं है, तो आप सर्व-शक्तिमान न्यायी की दृष्टि में काम कर रहे होते हैं। यहाँ आपके चरित्र की परीक्षा अन्धकार में होती है। आपके द्वारा देखा गया हर पैसा और चुकाया गया हर बिल आराधना के समान है।
- सुरक्षा की दीवार। उनके संसाधनों का प्रबन्धन करके, आप उन्हें एक ऐसे संसार से बचा रहे हैं, जो कमजोर लोगों का शिकार करता है। आप उनके और आधुनिक युग के “चोरों” —जैसे धोखाधड़ी करने वालों, अधिक पैसा वसूलने वालों और शोषणकारी व्यवस्थाओं—के बीच एक दीवार की तरह हैं।
- प्रदाता पर भरोसा करना। जब धन कम होने लगता है और लम्बे समय तक की जाने वाली देखभाल का खर्च बढ़ता जाता है, तो घबराहट होने लगती है। परन्तु “मालिक का सोना” उसी का है। देखभाल का खर्च उसे पता है। आपका काम हिसाब-किताब के साथ विश्वासयोग्य रहना है। प्रदाता बने रहना उसका काम है।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

ईमानदारी से उनके धन का प्रबन्धन करना उनके जीवन भर के परिश्रम का आदर करने का एक तरीका है। आप उस बात की रक्षा कर रहे हैं, जिसे बनाने में उन्होंने दशकों लगाए हैं। यह केवल अंकों की बात नहीं, बल्कि आदर की बात है। यह इस बात को सुनिश्चित करने के बारे में है कि उनके अन्तिम वर्ष बहीखाते के तनाव में नहीं, बल्कि उस वाचा की शान्ति में परिभाषित हों, जो कहती है कि “मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।”

प्रतिदिन के जीवन के मार्ग पर चलना

प्रतिदिन की देखभाल की चिसाई बड़े और नाटकीय पलों में नहीं दिखती। यह बार-बार होने वाले, उबाऊ, और अक्सर झुंझलाहट भरे विवरणों में दिखती है। यह बीमा कम्पनी को लगातार फोन करना होता है। यह दवाई की गलत पर्ची के कारण तीसरी बार दवाखाने जाना होता है। यह सुबह 10:00 बजे के मिलने के समय के लिए उन्हें गाड़ी में बैठाने का प्रयास करना होता है, जबकि 11:00 बजे तो आपको अपना कोई काम समाप्त करना है।

यहीं पर आपका प्रतिदिन का ईश-विज्ञान काम आता है। यदि आपका विश्वास केवल तभी काम करता है, जब सब कुछ “शानदार” और “प्रभावशाली” हो, तो वह बीमारी के कमरे में टिक नहीं पाएगा। आपको ऐसे विश्वास की आवश्यकता है, जो प्रतिदिन के जीवन की पवित्रता को समझे।

परमेश्वर किराने की दुकान के गलियारे में भी है। वह प्रतीक्षालय में भी है। वह बिना चुकाए चिकित्सकीय बिलों के ढेर में भी है। वही आपको आगे बढ़ते रहने की हिम्मत देता है, जब ऐसा लगता है कि यह “धीमा अन्तिम संस्कार” कभी समाप्त नहीं होगा। ऐसा नहीं है कि आप अपना “समय काट रहे हैं” या “अपना कर्तव्य निभा रहे हैं”। आप एक पवित्र काम में भागीदारी कर रहे हैं, जो आपको उद्धारकर्ता के जैसा दिखने वाला मनुष्य बना रहा है। वह आपके साथ है और आपके भीतर है।

मसीह केवल आपकी आत्मा के लिए नहीं मरा; वह भी एक शरीर में रहा था। वह जानता था कि थकना क्या होता है। उसे पता था कि जो लोग बात नहीं समझते, उनके साथ कैसे निपटा जाए। और इस मुश्किल में वह आपके साथ है।

यह विचार त्याग दें कि आपको इसे सिद्धता के साथ करना है। आप ऐसा नहीं कर पाएँगे। आप परेशान होंगे, आप चिड़चिड़े हो जाएँगे और आपको लगेगा कि आप विफल हो रहे हैं। परन्तु याद रखें कि परमेश्वर किसी सिद्ध देखभाल करने वाले को नहीं खोज रहा है। वह तो एक विश्वासयोग्य भण्डारी को खोज रहा है। न्यायी अपने आसन पर विराजमान है, और वह उस काम को देख रहा है, जो आप परदे के पीछे कर रहे हैं। बस इतना ही काफी है।

3

मन की खाई

देखिए, जब आपको एहसास होता है कि जिस व्यक्ति ने आपको आपका नाम दिया था, उसे अब यह भी याद नहीं कि आपको क्या कहकर बुलाना है, तो कमरे में एक विशेष प्रकार की खामोशी छा जाती है। चाहे आप कितनी भी पुरानी तस्वीरें निकाल लें या बीस वर्ष पुरानी कहानियाँ सुना लें, यह एक ऐसा खालीपन है, जो कभी भरता हुआ नहीं लगता। हम “सोचने-समझने की क्षमता कम होना” या “स्मरण-शक्ति खोना” जैसे चिकित्सकीय शब्द उपयोग करना पसन्द करते हैं, परन्तु किसी आम मंगलवार की दोपहर को, यह बस धीमी और विधिवत् चोरी के जैसा लगता है। आप किसी के इतिहास को मिटते हुए देखते हैं, जबकि उनका शरीर पीछे ही रह जाता है। यह एक ऐसी खाई है, जिसे कोई भी चिकित्सकीय योजना नहीं भर सकती। मनोभ्रंश और भूलने की बीमारी के साथ यही विशेष दुःख शामिल है, जिसमें मनुष्य साँस तो ले रहा होता है, परन्तु जिस माता-पिता को आप जानते थे, वे पहले से ही अन्धकार में खोने लगते हैं।

यही पर हमारा ईश-विज्ञान अक्सर डगमगाने लगता है। हम एक ऐसी संस्कृति में रहते हैं, जो “स्वयं” की उपासना करती है—जो यह विचार है कि आपके व्यक्तित्व, आपकी यादों और इस संसार के साथ मेलजोल करने की आपकी क्षमता से आपका महत्व जुड़ा हुआ है। जब ये बातें कमजोर पड़ने लगती हैं, तो हम घबरा जाते हैं। हम यह पूछने लगते हैं कि क्या वह व्यक्ति अभी भी “वहीं” है। यदि उन्हें अपना बपतिस्मा, अपनी सन्तान, या फिर अपना परमेश्वर भी याद नहीं रहता, तो और क्या बचता है? परन्तु एक छुटकारा पाए हुए हृदय को दिमाग की नसों से कहीं अधिक गहराई में देखना होता है। मनुष्य कोई कंप्यूटर नहीं है, जिसकी कीमत हार्ड ड्राइव क्रैश होने पर समाप्त हो जाए। हम आत्मा और शरीर की उस एकता में विश्वास रखते हैं, जिसे परमेश्वर की सर्व-सामर्थी श्वास के द्वारा रचा गया था और वही उसे बनाए रखती है। भले ही दिमाग काँटों के उलझे हुए ढेर जैसा हो जाए—जो पतन के कारण हुई मुश्किलों का सीधा परिणाम है—फिर भी इमेजो देई (परमेश्वर का स्वरूप) अविनाशी बना रहता है।

आपके माता-पिता में परमेश्वर का स्वरूप उनके किसी दिमागी परीक्षा में सफलता पाने की क्षमता पर निर्भर नहीं करता। यह इस तथ्य से जुड़ा हुआ है कि यह संसार की नींव पड़ने से पहले ही परमेश्वर ने उन पर अपना दावा कर दिया था। जब वे आपका नाम भूल जाते हैं, तो यह इस बात की गहरी याद दिलाता है कि उनकी पहचान असल में आपके साथ उनके रिश्ते में कभी नहीं थी, बल्कि पिता के साथ उनके रिश्ते में थी। परमेश्वर वादा करता है कि भले ही कोई माँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाए, वह कभी नहीं भूलेगा। परमेश्वर के सामने उनकी परिस्थिति उनके दिमाग की तेजी पर नहीं, बल्कि मसीह के पूरे किए गए काम पर निर्भर करती है। जब आपको एहसास होता है कि आप अपने ही पिता के लिए अजनबी बन गए हैं, तो केवल इसी बात से आपकी साँस में साँस आती है।

यह एहसास हमें सीधे उस बात की ओर ले जाता है, जिसे मैं उपस्थिति का काम कहता हूँ। एक ऐसे संसार में जो “प्रभाव” और “शानदार परिणामों” के पीछे भागता है, हम अक्सर ऐसा सोचते हैं कि यदि हम कुछ “कर” नहीं रहे हैं, तो हम अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। हमें लगता है कि यदि हमारे माता-पिता को पता ही न चले कि हम कमरे में हैं, तो हमारे वहाँ होने का कोई अर्थ नहीं है। परन्तु यह उस आत्मा का घमण्ड है, जो यह भूल चुकी है कि असल में आराधना करना कैसा दिखता है। किसी शान्त और शायद कम उजियाले वाले कमरे में ऐसे माता-पिता के साथ बस बैठे रहना, जो आपको पहचानते भी नहीं, एक पवित्र काम है। यह शायद अपने माता-पिता का आदर करने का सबसे शुद्ध तरीका है, क्योंकि इसमें आपको कोई भावनात्मक लाभ नहीं मिलता। इसमें न कोई “धन्यवाद” मिलता है, न पुरानी यादें ताजा होती हैं, और न ही आपको बलिदान की कोई बड़ाई होती है। बस आप होते हैं, एक कुर्सी होती है, और एक ऐसा व्यक्ति होता है, जो परमेश्वर के लिए अनमोल है।

यह हाशिए पर पड़े ईश-विज्ञान का सबसे कठिन रूप है। आप वहाँ इसलिए हैं, क्योंकि परमेश्वर ने आपको उस विशेष वंश में रखा है। आप अपने माता-पिता की गरिमा के भण्डारी के तौर पर वहाँ हैं, तब भी जब वे स्वयं अपनी गरिमा का दावा करने की क्षमता खो चुके हैं। जब आप वहाँ बैठकर वही उलझी हुई बातें सुनते हैं या किसी ऐसे दिमाग की भारी और अजीब खामोशी को सहते हैं, जो अब अन्धकारमय हो चुका है, तो आप मसीह की विश्वासयोग्यता का दर्पण बन रहे होते हैं। मसीह हमारे साथ इसलिए नहीं रहता, क्योंकि हम रोचक हैं या हम हमेशा उसकी भलाइयों को याद रखते हैं। मसीह इसलिए साथ रहता है, क्योंकि वह अपने चरित्र और अपने वादों के प्रति विश्वासयोग्य है। आपकी उपस्थिति इस तथ्य की भौतिक गवाही है कि आपके माता-पिता का जीवन अभी भी महत्व रखता है, भले ही यह संसार अधिक “उत्पादक” बातों की ओर बढ़ गया हो। आप उस परमेश्वर के हाथ-पाँव बनकर काम कर रहे हैं, जो दिमाग भटक जाने पर भी साथ रहता है।

परन्तु आइए इस यात्रा के अन्धकारमय पहलू के बारे में सच्चे बनें। इसमें हमेशा शान्त कमरे और हाथ पकड़ना ही नहीं होता। अक्सर, इसमें गुस्सा भी होता है। अचानक से प्यारी माँ की शब्दावली किसी नाविक के जैसी हो जाती है, या कोमल पिता आक्रामक और सन्देह करने वाला बन जाता है, क्योंकि वह घर में मौजूद उन “अजनबियों” से डरता है, जो उसकी सन्तान होने का दावा करते हैं। यह देखभाल करने की वह वास्तविकता है, जिसके बारे में कोई आपको चेतावनी नहीं देता। इस उलझन और गुस्से से निपटने के लिए एक अलौकिक हृदय की आवश्यकता होती है। आपको यह समझना होगा कि आप अपने माता-पिता से नहीं लड़ रहे हैं; आप एक बिखरी हुई रचना की कमजोरी से लड़ रहे हैं। यह गुस्सा “उन” लोगों पर नहीं है—यह आत्मा की मशीन के रगड़ने की आवाज है, क्योंकि मन अब संसार को समझ नहीं पा रहा है।

इस अन्धकार में धीरे-धीरे धरने का अर्थ केवल “अच्छी सोच” रखना या दिखावे के लिए शाहीद बनना नहीं है। इसका अर्थ उत्पत्ति 3 अध्याय की गहरी समझ होना है। आपको बिना पलटवार किए चोट सहना सीखना होगा। आपको अन्धकार से भरे कमरे में बिना घबराए उपस्थित रहना सीखना होगा। इसका अर्थ “सही” होने की अपनी आवश्यकता के लिए मर जाना है। यदि आपके पिता को लगता है कि अभी सन् 1960 चल रहा है और उन्हें काम पर जाना है, तो दिनदर्शिका को लेकर उनसे बहस न करें। तथ्यों के द्वारा उनकी सच्चाई को “ठीक” करने का प्रयास न करें। आप सन् 1960 में उनके साथ जुड़ें। समयकाल की “सच्चाई” की कीमत पर, उनकी शान्ति की रक्षा करके उनका आदर करें। इस दौर में आदर करने का अर्थ

बूढ़े माता-पिता की देखभाल करना

उन्हें अपने संसार में लाने के लिए विवश करने के बजाय शालीनता से उनकी सच्चाई को समझना है। यह उनके आराम के निमित्त अपने अहंकार को मार डालना है।

कई वयस्क बच्चे स्वयं को एक विशेष तरह के अपराध-बोध में डूबता हुआ पाते हैं, जब उन्हें अपने माता-पिता के लक्ष्णों पर एकदम से गुस्सा महसूस होता है। उन्हें लगता है कि वे इसलिए विफल हो रहे हैं, क्योंकि बार-बार होने वाली बातों से या आरोपों से वे निराश महसूस करते हैं। परन्तु उस अपराध-बोध से बाहर निकलने का पहला कदम यह पहचानना है कि आपका गुस्सा असल में एक छिपा हुआ दुःख है। आप रोग, पतन और मन के काँटों से गुस्सा हैं, परन्तु आप अपना गुस्सा उस व्यक्ति पर इसलिए निकालते हैं, क्योंकि कमरे में वे ही खड़े हैं। आपको उस तपन को क्रूस तक ले जाना होगा। आपको सर्व-शक्तिमान परमेश्वर के सामने अपनी सीमाओं को स्वीकार करना होगा और यह समझना होगा कि आप उनके लिए पवित्र आत्मा नहीं बन सकते। आप इस कराहते हुए संसार की जैविकी को ठीक नहीं कर सकते। आप बस अपने सामने उपस्थित व्यक्ति के एक विश्वासयोग्य भण्डारी बन सकते हैं।

यह लम्बी और धीमी विदाई वह भट्टी है, जिसमें परमेश्वर आपके घमण्ड को समाप्त कर देता है। इस जीवन्त संसार में, हम सफल देखभाल करने वाले के तौर पर पहचाने जाना चाहते हैं, जिसके नियंत्रण में सब कुछ हो। परन्तु भूलने की बीमारी और मनोभ्रंश आपके नियंत्रण पर हँसते हैं। वे आपके कार्यक्रम और आपके हृदय को तोड़ देते हैं। वे आपको यह समझने के लिए विवश करते हैं कि आप उस कहानी के नायक नहीं हैं। आप तो बस एक सेवक हैं। और उस सेवा में, आपको महिमा का वह भार महसूस होता है, जिसके बारे में बाकी संसार कुछ नहीं जानता। आप वहीं खड़े हैं, जहाँ मसीह खड़ा था—और उन लोगों की सेवा कर रहे हैं, जो आपको कुछ लौटा नहीं सकते, उनसे प्रेम कर रहे हैं, जो आपको पहचानते नहीं, और उस पिता पर भरोसा कर रहे हैं, जो बीमारी के कमरे की गुप्त, शान्त (या शोर-शराबे वाली) जगहों पर किए गए हर काम को देखता है।

यदि आज रात आप किसी कमरे में बैठे हुए अपने माता या पिता की भारी साँसें सुन रहे हैं और सोच रहे हैं कि क्या इन सब बातों का असल में कोई महत्व है, तो मेरी बात सुनें: राजा के लिए यह महत्व रखती हैं। आप जो काम कर रहे हैं—जैसे कि बैठे रहना, प्रतीक्षा करना, उलझन को सह लेना—वह आपके जीवन का “खोया हुआ” समय नहीं है। यह पवित्रता के आपके अगले चरण की बुनियाद है। आप ऐसे मनुष्य बन रहे हैं, जो जानता है कि असल में केवल परमेश्वर की वाचा की विश्वासयोग्यता ही हमेशा बनी रहती है। हो सकता है कि आपके माता-पिता की पकड़ आप पर ढीली हो जाए, परन्तु परमेश्वर की पकड़ उन पर और आप पर कभी ढीली नहीं होगी। कमरे में बने रहें। अपना कर्तव्य निभाते रहें। परछाइयाँ लम्बी हैं, परन्तु सुबह होने वाली हैं। यह अन्तिम मील है, और यह ऐसे अनुग्रह से भरा है, जो मन की खाई से भी अधिक गहरा है।

एक दिन, धुंध छँट जाएगी। दिमाग की नसें बहाल हो जाएँगी। मन के काँटे हट जाएँगे। और उस दिन, जिस व्यक्ति से आप प्रेम करते थे, वे आपको वर्षों के बाद पहली बार साफ-साफ देख पाएँगे। वे आपका नाम जान जाएँगे। परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे देखेंगे कि आप डटे रहे। जब यह संसार अन्धकारमय था, तब आप विश्वासयोग्य रहे। आपने दया का मार्ग चुना, जब आपको बदले में कुछ नहीं मिल रहा था, बस एक अच्छी तरह से निभाए गए कर्तव्य का शान्त सन्तोष मिल रहा था। तब तक, मजबूती से डटे रहें। न्यायी अपने आसन पर विराजमान है, और चरवाहा उस कमरे में है। आप इस खाई से अकेले नहीं गुजर रहे हैं।

4

कलीसिया और देखभाल करने वाला

बिना कड़वाहट के सीमाएँ तय करना: अहंकार की नहीं, आत्मा की रक्षा करना

जब आप ऐसे माता या पिता की देखभाल कर रहे होते हैं, जिनका जीवन धीरे-धीरे मिट्टी में मिल रहा होता है, तो घर में एक विशेष प्रकार की खामोशी छा जाती है। यह किसी मठ का शान्ति देने वाला सन्नाटा या मेहनत के बाद मिले विश्राम जैसी खामोशी नहीं होती। यह एक भारी और घनी खामोशी होती है, जिसमें सड़न रोकनेवाली दवा की और बुढ़ापे की गंध होती है। यह उस जीवन की आवाज है, जो अपनी सबसे बुनियादी आवश्यकताओं तक सिमट रहा है। और उस सन्नाटे में, जब आप ठीक वही काम कर रहे होते हैं, जिसके लिए प्रभु ने आपको बुलाया है, तो एक अकेलापन महसूस होने लगता है, जो आपकी आत्मा को भीतर से खोखला कर सकता है। आप पाँचवीं आज्ञा के पुराने मार्ग पर खड़े हैं, परन्तु आपको ऐसा लगता है, जैसे आप इस पर अन्धकार में अकेले चल रहे हों।

असली समस्या यह नहीं है कि लोग सहायता नहीं करना चाहते या परमेश्वर ने मुँह मोड़ लिया है। समस्या यह है कि डर—और थोड़ा बहुत घमण्ड—बीमार व्यक्ति के कमरे और प्रार्थना-स्थल के बीच एक गहरी खाई बना देते हैं। हम रविवार को “मसीह की देह” के बारे में बात करते हैं, परन्तु मंगलवार सुबह तक, जब कपड़े धोने के लिए जमा हो जाते हैं और दवा का समय गड़बड़ा जाता है, तो कलीसिया कोई दूर की अफवाह जैसी लगने लगती है। आप भण्डारीपन का कठिन और चुनौतीपूर्ण काम कर रहे होते हैं, परन्तु यह संसार—और अक्सर कलीसिया भी—आपके बिना ही आगे बढ़ती रहती है।

हम देखभाल करने वाले के अकेलेपन के बारे में बात करना पसन्द नहीं करते, क्योंकि यह विश्वास की कमी जैसा लगता है। हमें लगता है कि यदि हम सच में “आत्मिक” होते, तो हमारे खोए हुए सामाजिक जीवन या ठहरे हुए पेशे के खालीपन को पूरा करने के लिए परमेश्वर की उपस्थिति ही पर्याप्त होती। हम पक्के तौर पर जानते हैं कि हमें अलग-थलग व्यक्ति नहीं, बल्कि एक समुदाय के सक्रिय सदस्य के तौर पर रहना था। और फिर भी, इसमें एक गहरा अकेलापन होता है—जो सेवक का अकेलापन है, अर्थात् यह एहसास कि आपके उठाए हुए बोझ को कोई और सच में नहीं बाँट सकता। सबसे अच्छी मंशा वाले मित्र भी अन्त में ऐसे घर में जाते हैं, जहाँ दवाइयों की दुकान जैसी गंध नहीं होती। वे रात भर सोते हैं, जबकि आप अन्धकार में गिरने की आवाज या घबराहट भरी चीख सुनते रहते हैं।

उस अकेलेपन में, शलु कान में फुसफुसाता है कि आपको भुला दिया गया है। वह कहता है कि आपका जीवन अन्धकार में बर्बाद हो रहा है। परन्तु प्रतिदिन का ईश-वैज्ञानिक जानता है कि सर्व-सामर्थी राजा की दृष्टि बीमार व्यक्ति के कमरे पर

बूढ़े माता-पिता की देखभाल करना

उतनी ही होती हैं, जितनी कि उपदेश देने के मंच पर या छोटे से साप्ताहिक बाइबल अध्ययन समूह पर होती है। यह अकेलापन वह भट्ठी है, जिसमें आपका स्वयं पर भरोसा जलकर समाप्त हो जाता है। यहीं आप सीखते हैं कि आपकी पहचान कलीसियाई संगठन के लिए “उपयोगी” होने में नहीं, बल्कि परमेश्वर के द्वारा दी गई जिम्मेदारी के प्रति विश्वासयोग्य रहने में है। फिर भी, हम एक ऐसे संसार में रहते हैं, जो जोश और शोर-शराबे को महत्व देता है, और चूँकि देखभाल करने का काम शान्ति से और बिना दिखाई दिए होता है, इसलिए ऐसा महसूस होना आसान है कि आप जीवित लोगों के नकशे से गायब हो गए हैं।

परन्तु हमें यह समझना होगा कि देखभाल करने वाले और मण्डली के बीच की खाई अक्सर हमारे अपने हाथों से ही खोदी जाती है। हम कलीसिया को एक प्रदर्शनी-घर की तरह समझते हैं, जहाँ हम केवल अपना चमकाया हुआ और “जोशीला” रूप दिखाते हैं। यदि एक घण्टे के लिए हम घर से बाहर निकल पाएँ—तो हम कलीसिया में जाते हैं—और जब कोई पृच्छता है कि आप कैसे हैं, तो हम कहते हैं कि “अच्छे हैं।” हम झूठ इसलिए बोलते हैं, क्योंकि हम बोझ नहीं बनना चाहते। हम झूठ इसलिए बोलते हैं, क्योंकि हमें लगता है कि सहायता माँगना कमजोर ईश-विज्ञान या साहस की कमी का चिन्ह है। हमें लगता है कि हमें किसी भी परिस्थिति को शान्त मुस्कान और धार्मिक पुस्तकों के उद्धरण के साथ सम्भालना चाहिए। परन्तु अकेले लड़ते रहना विश्वास नहीं है; यह बस वह घमण्ड है, जो रविवार वाला कोट-पेंट पहने हुए है।

मसीह की देह स्वस्थ लोगों के लिए कोई सामाजिक गोष्ठी नहीं है, बल्कि टूटे हुए लोगों के लिए एक अस्पताल है। और हम सब किसी न किसी तरह से टूटे हुए हैं। यदि आप बूढ़े लोगों की देखभाल की जिम्मेदारियों में डूबे हुए हैं और आपने अपनी कलीसिया के भाई-बहनों को, रविवार की पाठशाला की कक्षा को, या अपने छोटे समूह को इसके बारे में नहीं बताया है, तो आप उनके कलीसिया बनने के अवसर को चुरा रहे हैं। आप ऐसा व्यवहार कर रहे हैं कि मानो केवल आपको ही मजबूत रहना है, जो कि असल में स्वयं का उद्धारकर्ता बनने का एक छोटा सा प्रयास है। देह की खोज करने का अर्थ सहायता माँगने का मुश्किल परन्तु कमजोरी दिखाने वाला कौशल सीखना है। इसका अर्थ इतना ईमानदार होना है कि आप कह पाएँ कि आप यह अकेले नहीं कर सकते। आपको कोई ऐसा व्यक्ति चाहिए, जो आपके पिता के पास इसलिए बैठे, ताकि आप सो सकें। आपको भोजन चाहिए, क्योंकि आपने एक सप्ताह से किराने की दुकान नहीं देखी है। यह कोई विफलता नहीं है। यह ईमानदारी और समझदारी से यह मानना है कि आप सीमित क्षमताओं वाले प्राणी हैं। और यह इस बात को भी मानना है कि संगति का अर्थ केवल चाय-पकौड़े पर बातचीत करने से कहीं बढ़कर है। मसीह की देह के सदस्यों के रूप में एक-दूसरे का बोझ उठाना ही संगति है।

यह हमें सबसे गहरी मुश्किल वाली बात पर ले आता है: जो स्वयं की मूर्ति है। हम अकेलेपन के बारे में बात करते हैं, परन्तु अक्सर हम अपने भीतर उबल रही नाराजगी को अनदेखा कर देते हैं। हमें गुस्सा इसलिए आता है, क्योंकि हमारे “सिद्ध” जीवन में रुकावट आ गई है। हमारे पास योजनाएँ थीं, पेशा चुने का मार्ग था और सप्ताह के अन्त के लिए एक सपना था। फिर परिस्थिति ने दखल दिया और लकवा मार गया या किसी बीमारी का पता चला, और अचानक से, आपका जीवन अब आपका नहीं रहा। यहीं पर पूरी तरह से श्रद्धा होने का सिद्धान्त व्यक्तिगत हो जाता है। हम ऐसे माता या पिता को देखते हैं, जो उलझन में हैं या बहुत अधिक माँग करते हैं, और हम परमेश्वर के एक प्रतीक को देखने के बजाय, एक बाधा को देखते हैं। हम ऐसे व्यक्ति को देखते हैं, जो हमारा समय, हमारा धन, हमारे लक्ष्य और हमारी शान्ति छीन रहा है।

स्वयं की मूर्ति चिल्लाने लगती है, क्योंकि उसकी स्वतंत्रता छिन रही होती है। परन्तु मसीही समझ में, सच्ची स्वतंत्रता वह सब करने की क्षमता नहीं है, जिसे हम चाहते हैं। यह वह करने—या उसे अपनाने की क्षमता है—जिसके लिए हमें बनाया गया था। आपको एक भण्डारी के रूप में बनाया गया था। आपके माता-पिता की आवश्यकताओं के कारण आई “रूकावट” आपके जीवन से कोई भटकाव नहीं है; बल्कि इस समय पर यही आपका जीवन है। यह वही विशेष काम है, जिसे परमेश्वर ने इस संसार की नींव रखने से पहले ही आपके लिए तैयार किया था। जब हम कमजोर माता-पिता की आवश्यकताओं से चिढ़ जाते हैं, तो हम परमेश्वर से यह कह रहे होते हैं कि हमारे दिन के लिए उसकी योजना हमारी अपनी योजना से कमतर है। यह एक ऐसा घमण्ड है, जिसे हमें क्रूस के पास ले जाने की आवश्यकता है। हमें यह मानना होगा कि हम स्वार्थी हैं और उस बीमार व्यक्ति के कमरे में रहने के बजाय कहीं और रहना अधिक पसन्द करेंगे।

जब आप अपने माता-पिता को रूकावट के रूप में देखना बन्द करके, उन्हें जीवन के इस चरण में अपनी जिम्मेदारी के रूप में देखने लगते हैं, तो परेशानी समाप्त तो नहीं होती, परन्तु उससे हमारा पारा चढ़ने के बजाय कुछ और ही होने लगता है। उससे पवित्रता का सुखदायी फल, और धार्मिकता का शान्तिदायक फल भी मिलता है। परछाई में भी एक गहरी गरिमा होती है। यह संसार “प्रभाव डालने” के पीछे भागता है, परन्तु राज्य में “बड़ी बात” अक्सर तब होती है, जब आप सौवीं बार वही प्रश्न पूछे जाने पर भी धीरज बनाए रखते हैं। बिस्तर बदलने या किसी का हाथ थामे रखने की ऐसी शान्त और अटल सेवा में ही इसका प्रभाव दिखता है। इसके लिए कोई तख्ती या तालियाँ नहीं मिलती, परन्तु उस मालिक की ओर से “शाबाशी” मिलती है, जो गुप्त में देखता है।

देखभाल करने वालों को टिके रहने के लिए, कलीसिया और वचन से जुड़े रहना चाहिए। यदि आप अपनी आत्मा को सर्व-सामर्थी अनुग्रह में नहीं डुबोएँगे, तो आपकी सहन-शक्ति और धीरज समाप्त हो जाएगी। आपको याद रखना होगा कि जब आप किसी दूसरे की देखभाल कर रहे होते हैं, तब आपकी भी देखभाल हो रही होती है। आपकी सामर्थ्य कम है, परन्तु उस चरवाहे की सामर्थ्य असीम है। हमें “शहीद होने के घमण्ड” से भी बचना चाहिए—जो यह सोचना है कि हमारे जैसा दुःख कोई दूसरा नहीं सह रहा। यह केवल अकेलेपन की ओर वापस ले जाता है। इसके बजाय, इस मेहनत को मसीह के दुःखों में भागीदारी के तौर पर देखें। वे उस बोझ, धूल की गंध और रात की खामोशी को जानता है। एक दिन, यह मेहनत समाप्त हो जाएगी। दवा की शीशियाँ खाली हो जाएँगी, और खामोशी बदल जाएगी। तब तक, उस कमरे में बने रहें। अपना कर्तव्य निभाते रहें। प्रभु कभी देर नहीं करता।

5

अन्तिम मील

देखिए, मार्ग तो आखिरकार समाप्त हो ही जाता है। चाहे आप कितनी भी बार चादरें बदलें, कितनी भी दवाइयाँ व्यवस्थित करें, या कितनी भी बार उसी उलझे हुए प्रश्न का उत्तर दें, यह “धीमा अन्तिम दाह संस्कार” अन्त में अपने निष्कर्ष तक पहुँच ही जाता है। वह कमरा अन्तिम बार शान्त हो जाता है। दवा की शीशियाँ खाली हो जाती हैं। बीमार के कमरे की भारी और दवा वाली गंध गायब होने लगती है, और उसकी जगह उस कुर्सी की तीखी और ठण्डी सच्चाई ले लेती है, जो अब खाली हो चुकी है। यही वह पल है, जिससे हर देखभाल करने वाला डरता है और, यदि हम सच कहें तो, कुछ लोगों ने चुपके से इस पल की प्रतीक्षा भी की होती है, ताकि—उनका और आपका—वह दुःख आखिरकार समाप्त हो जाए।

नये शरीर की आशा

हम उन लोगों की तरह शोक नहीं मनाते, जिनके पास कोई आशा नहीं है। मसीही होने के नाते, हम आत्मा के केवल एक भूतिया, बिना शरीर वाले धुँएँ के रूप में बने रहने में विश्वास नहीं करते। हम शरीर के पुनरुत्थान अर्थात् फिर से जीवित होने में विश्वास रखते हैं। हमारा विश्वास है कि जिस परमेश्वर ने केवल कहकर तारों को अस्तित्व प्रदान किया, वही परमेश्वर एक दिन आपकी माँ की कब्र की धूल से और आपके पिता के विश्राम-स्थल की राख से भी बात करेगा।

दिमाग की खार्ई—भूलने की बीमारी और मनोभ्रंश से उत्पन्न होने वाली वह भयानक शून्यता—हमेशा के लिए नहीं होती। दिमाग की जिन नसों ने काम करना बन्द कर दिया, जो कूल्हे टूट गए, और जो हृदय धड़कने से रुक गए, वे सब उस राजा के अधिकार क्षेत्र में आते हैं, जो हर बात को नया बनाने का विशेषज्ञ है। जब हम अन्तिम मील के छोर पर खड़े होते हैं, तो हमारी आशा एक ऐसे शरीर के वादे पर टिकी होती है, जो कभी नहीं टूटेगा, कभी धोखा नहीं देगा और कभी कुछ नहीं भूलेगा। वह ऐसा शरीर होगा, जो नष्ट नहीं होगा। आपके माता-पिता अनन्त जीवन में केवल एक खोखले शरीर के रूप में प्रवेश नहीं करेंगे। वे उस सिद्ध स्वरूपधारी के तौर पर प्रवेश करेंगे, जैसा उन्हें हमेशा होना था। उत्पत्ति 3 अध्याय के कॉटे आखिरकार और हमेशा के लिए उखाड़ दिए जाएँगे।

बाद का भण्डारीपन

परन्तु जब सन्नाटा छाता है, तो अपराध-बोध भी आता है। यह देखभाल करने वाले के हृदय में “गिद्ध” की तरह होता है। आप पुरानी बातें याद करने लगते हैं। आपको वे पल याद आते हैं, जब आप चिड़चिड़े हो गए थे, जब आप गाड़ी में दस मिनट अधिक बैठे रहे, क्योंकि आप भीतर जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे, और जब आपने चाहा था कि सब समाप्त हो जाए। आप सोचते हैं: क्या मैंने पर्याप्त किया? क्या मैं विश्वासयोग्य रहा?

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

आपको उस अपराध-बोध को उसी क्रूस पर ले जाना होगा, जहाँ आप अपनी थकान लेकर गए थे। आपको कभी भी एक सिद्ध उद्धारकर्ता नहीं बनना था। आप एक ऐसे पतित प्राणी थे, जो इस बिखरे हुए संसार में एक दूसरे पतित प्राणी की देखभाल कर रहे थे। “पूरी पृथ्वी का न्यायी” उन मंगलवार की सुबहों के तनाव को जानता है, जिन्हें आपने झेला है। उसने उस तपन और घिसाई को देखा है। वह आपसे बिना किसी गलती के काम करने की आशा नहीं करता, बल्कि वह तो ऐसे हृदय की आशा करता है, जो कमियों को भरने के लिए मसीह के लहू पर भरोसा करे। अपराध-बोध व्यर्थ ही यह कहता है कि पवित्र होने के लिए आपका काम एकदम सिद्ध होना चाहिए था। ऐसा नहीं था। बस इसे उस काठ की छाया में किया जाना था।

मालिक का निर्णय

जब आपको एहसास होता है कि आपने दौड़ पूरी कर ली है, तो एक ऐसी शान्ति मिलती है, जिसे समझा नहीं जा सकता। आप भाग नहीं गए। आपने अपनी जिम्मेदारी नहीं छोड़ी। आप उस कमरे में डटे रहे। आप मार्ग पर तब तक चलते रहे, जब तक कि वह समाप्त नहीं हो गया। यही अपने माता-पिता का आदर करने का सार है। यह कोई भावना नहीं, बल्कि पूरी की गई एक जिम्मेदारी है।

जब आप इस सब के बाद खड़े होते हैं, तो केवल उस निर्णय को सुनें, जो महत्व रखता है। यह आपके भाई-बहनों का, आपकी कलीसिया का या आपके स्वयं-की-आलोचना-करने-वाले हृदय का निर्णय नहीं है। यह मालिक का निर्णय है: “धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास।” आप “मालिक के सोने” के प्रति—अर्थात् उस व्यक्ति का जीवन और गरिमा, जो उसने आपको सौंपा था—विश्वासयोग्य रहे। आपने इसे नाराजगी की धूल में नहीं दबाया। आपने इसे दया के राज्य में निवेश किया। जो आदर का बोझ आपने उठाया था, वह आखिरकार महिमा के बोझ में बदल गया है। पीड़ा समाप्त हो गई है। आँसू पोछ दिए गए हैं। चरवाहा आप दोनों को घर ले आया है।



निष्कर्ष:

अनुग्रह की फसल

विश्वासयोग्यता के साथ समाप्त होने वाले जीवन में एक शान्त और मजबूत सुन्दरता होती है—ऐसी सुन्दरता, जो तख्ती पर तो नहीं दिखती, परन्तु स्वर्ग के गलियारों में जिसकी चर्चा होती है। मुझे एक स्त्री याद है, जिसने “मुश्किल दौर” में सात वर्ष बिताए; वह अपने ऐसे पति की देखभाल कर रही थी, जिसे अपना ही नाम तक याद नहीं था। और अन्तिम दिन में, न तो कोई बड़े-बड़े भाषण दिए गए और न ही स्पष्टता के कोई सिनेमा जैसे क्षण आए। बस साँस लेने वाली मशीन की वही आवाज थी और एक पत्नी का मजबूत हाथ, जिसने हार मानने से इन्कार कर दिया था। और जब अन्त आया, तो कमरा पराजय की जगह नहीं, बल्कि अनाज साफ करने वाली जगह जैसा लगा। जीवन भर की छोटी-मोटी बहस और शिकायतों का कचरा, अपनी जिम्मेदारी को अच्छे से निभाने की तेज हवा में उड़ गया था। बस प्रेम का शुद्ध अनाज ही बचा था, जो बीमारी के कमरे की भट्टी में तपकर निखर गया था।

यदि आप अभी अस्पताल की कुर्सी पर बैठे हैं, मशीनों की आवाजें सुन रहे हैं और “धीमे अन्तिम संस्कार” का भार महसूस कर रहे हैं, तो आपको यह सुनना चाहिए: यह दौर आपके जीवन में कोई रुकावट नहीं है। यही आपका जीवन है। और यह एक उपहार है—यह एक मुश्किल, भारी और कठिन एवं चुनौतीपूर्ण उपहार उस परमेश्वर की ओर से है, जो आपसे इतना प्रेम करता है कि आपको आपके घमण्ड के भरोसे नहीं छोड़ सकता। वह इस मुश्किल परिस्थिति का उपयोग आपके घमण्ड की तीखी धार को घिसकर चिकना करने के लिए कर रहा है। वह बार-बार होने वाली बातों का, दवाइयों की गंध का और अकेलेपन का उपयोग आपको ऐसी शब्दावली सिखाने के लिए कर रहा है, जो यह “जोशीला” संसार कभी नहीं सीख सकता—जो अनुग्रह, सहन-शक्ति और ऐसी आशा की शब्दावली है, जो हृदय की धड़कन से जुड़ी हुई नहीं है। आपको उस पुत्र के स्वरूप में निखारा जा रहा है, जो वाटिका में उस समय भी डटा रहा, जब उसका पसीना लहू बन गया था।

अन्तिम मील के लिए एक प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, सम्पूर्ण संसार के न्यायी और हमारी आत्माओं के चरवाहे, मैं उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ, जिसका प्राण अब कमजोर पड़ रहा है। मैं उस बेटी के लिए प्रार्थना करता हूँ, जो सानघर में रो रही है, कि उसकी माँ उसका डर न देखे। मैं उस बेटे के लिए प्रार्थना करता हूँ, जिसकी पीठ उस कर्तव्य के बोझ से टूट रही है, जिसे उसने कभी नहीं माँगा था।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

हे प्रभु, उन्हें अपनी अलौकिक सामर्थ्य में भागीदार बना। जब तपन बढ़े और शरीर बलवा करे, तो उन्हें याद दिला कि तू ही न्याय आसन पर विराजमान है और तू ही उस कमरे में मौजूद है। उनकी असिद्धता के दोष को मिटा दे और उसकी जगह अपने प्रावधान की शान्ति भर दे। उन्हें परछाइयों में भी गरिमा और मलमल के कपड़ों में पवित्रता देखने दे। अन्तिम मील तक उन्हें सम्भाले रख, और जब दौड़ पूरी हो जाए, तो उन्हें पुनरुत्थान के वादे में यह जानते हुए विश्राम करने दे कि क्रूस के कारण, कोई भी विश्वासयोग्य काम कभी व्यर्थ नहीं जाता। जो हमेशा साथ रहता है, उसी के नाम पर इस प्रार्थना को माँगते हैं। आमीन।



डॉ. रिचर्ड जॉन परहार्ड, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्रा कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे “एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्टिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस” (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodoret of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

